**त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर**

द्वारा आयोजितएवं

**वाणी फाउंडेशन, दिल्ली** तथा **अयोध्या शोध संस्थान, उत्तर प्रदेश**

द्वारा प्रायोजित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

**दिनांक- 24, 25 एवं 26 मार्च, 2022**

# "दक्षिण-पूर्व एशिया में राम का सांस्कृतिक पथ: पूर्वोत्तर भारत संदर्भ"

**आयोजन समिति-**

**संरक्षक- प्रो. गंगा प्रसाद प्रसाईं, माननीय कुलपति, त्रिपुरा विश्वविद्यालय**

**संगोष्ठी संयोजक- डॉ. मिलन रानी जमातिया, एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय**

**सह-संयोजक- डॉ. सोमदेव बनिक एसोशिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग,त्रिपुरा विश्वविद्यालय**

**सह-संयोजक- डॉ. देवराज पाणिग्रही एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,त्रिपुरा विश्वविद्यालय**

**सह-संयोजक- डॉ. मलय देब, असिस्टेंट प्रोफेसर, बंगला विभाग,त्रिपुरा विश्वविद्यालय**

**सह-संयोजक- श्रीमती खुमतिया देबबर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, कॉकबरक विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय**

जैसा कि हम जानते हैं, रामकथा की शुरुआत आदि कविवाल्मीकि से होती है। उनके द्वारा विरचित रामायण की विशिष्टता यह है कि रामकथा न केवल देश-विदेश की अनेक भाषाओं के साहित्य की विभिन्न विधाओं में तीन सौ से भी अधिक मौलिक रचनाओं का उपजीव्य बनी, वरन इसने भारत और एशिया समेत अनेक देशों के नाट्य, संगीत, मूर्ति तथा चित्रकलाओं को प्रभावित किया है। रामायण का आदि रचनाकार एक महान अभियंता की तरह अपने महाकाव्य का इतना भव्य और सुदृढ़ महल खड़ा करता है कि कालांतर में उस पर मंजिल पर मंजिल बनती जाती हैं, फिर भी न तो कभी उसकी नींव खिसकती है और न बड़ा से बड़ा भूकंप उसे हिला पाता है। देशी-विदेशी साहित्यकारों ने मूलकथा के इर्द-गिर्द उपकथाओं के इतने परकोटे खड़े कर दिए कि कोई भी आक्रमणकारी उसके अंदर प्रवेश कर उस अद्वितीय भवन को क्षति ग्रस्त नहीं कर सका।

रामकथा का रचनात्मक स्वरूप इतना अनूठा, सशक्त और जीवंत है कि अन्य कोई कथा उसे पचा नहीं पायी, उल्टे उसके आख्यान और उपाख्यान बनकर रह गए। उसकी विशिष्टता वस्तुत: उसके स्वरुप के लचीलेपन में समाहित है। देश-काल के परिवर्तन के साथ रामकथा के अंतर्गत भी बदलाव आता गया। देशी-विदेशी साहित्य सर्जकों ने इसे अपने-अपने ढंग से सजाया संवारा। रामकथा जहाँ कहीं भी गयी, वहाँ के हवा-पानी में घुल-मिल गयी, किंतु अनगिनत परिवर्तनों के बीच भी उसकी सर्वोच्चता ज्यों की त्यों बनी रही, अनेक शिखरों वाले धवल-उज्जवल हिमालय की तरह जिसका रंग सुबह से शाम तक बार-बार बदलता है, फिर भी उसके मूल स्वरुप में कोई बदलाव होता नहीं दीखता। संभवत: इसी कारण रामकथा पर आधारित जितनी मौलिक कृतियों का सृजन हुआ, संसार के किसी भी अन्य कथा को वह सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका। रामचरित अनेक देशों के प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक संदर्भ और सांस्कृतिक आदर्शों के अनुरुप ढलता-सँवरता रहा। रामकथा परआधारित विदशी कृतियाँ विविधता और विचित्र से परिपूर्ण है।

वाल्मीकि से प्रेरित और प्रभावित होकर भारत और एशिया समेत दुनिया भर की विभिन्न भाषाओं, जीवन, और कलाओं में रामकथा के रूपांतर मिलते हैं। इंडोनेशिया, कंपूचिया, थाइलैंड, लाओस,श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, कंबोडिया की चित्रकला और मूर्तिकला पर रामकथा के दृष्टांत मिलते हैं। मॉरीशस में हमारे पूर्वजों को काले पानी की सजा मिली थी तो दिनभर जीत और परिश्रम के बाद शामको राम~कथा (रामायण) ही उनको राहत देती थी तथा हताशा और अवसाद से उबारती थी। यह उनकी संजीवनी थी। मानसिक और आर्थिक साम्राज्यवाद से निपटने के लिए आज इस संजीवनी कथा को पुनर्जीवित करने की जरूरत है और चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से लोगों के मानस की देहरी पर राम नाम रूपी दीपक को प्रतिष्ठित करने की महती आवश्यकता है।

इस क्रम में पूर्वोत्तर भारत में खासकर त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय आदि जैसे राज्यों में रामकथा के सूत्रों, राम की उपस्थिति एवं अवस्थिति को खोजे जाने की जरूरत है।

**उक्त उद्देश्य के विचारार्थ आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, अगरतला वाणी फाउंडेशन, नई दिल्ली एवं अयोध्या शोध-संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश की आर्थिक सहयोग से 'दक्षिण- पूर्व एशिया में राम का**

**<u>सांस्कृतिक पथ: पूर्वोत्तर भारत संदर्भ’</u> विषय पर दिनांक: 24-26 मार्च, 2022 को एक त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। दिनांक 24-25 मार्च को संगोष्ठी का उद्घाटन एवं तकनीकी सत्रों का आयोजन त्रिपुरा विश्वविद्यालय में होगा तथा 26 मार्च को उनाकोटि (धर्मनगर) में शैक्षणिक भ्रमण एवं दर्शन का कार्यक्रम रहेगा।**

इस त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब यहाँ आए देश-भर के प्रतिभागी त्रिपुरा सहित पूर्वोत्तर और देश के विभिन्न हिस्सों से आकर यहाँ के जीवन, साहित्य, कलाओं, इतिहास में राम की उपस्थिति एवं अवस्थिति पर खुलकर विमर्श करें। तीन दिन की इस संगोष्ठी का उद्घाटन त्रिपुरा विश्वविद्यालय में किया जाएगा और समापन स्थापत्य और कला की दृष्टि से यहाँ के ऐतिहासिक स्थान उनाकोटि में किया जाएगा। इसे ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत संगोष्ठी को निम्न संभावित उप-शीर्षकों में बाँटा गया है-

1. पूर्वोत्तर भारत के लोक एवं जनश्रुतियों में राम की सांस्कृतिक उपस्थिति
2.पूर्वोत्तर भारत के पुरालेखों एवं इतिहास में रामकथा के विविध संदर्भ
3.पूर्वोत्तर भारत से संबंधित लिखित साहित्य में रामकथा
4.पूर्वोत्तर भारत से संबंधित मौखिक साहित्य एवं जीवन में रामकथा का संदर्भ
5.पूर्वोत्तर भारत के पुरालेखों एवं इतिहास में रामकथा के विविध संदर्भ
6. पूर्वोत्तर भारत में रामकथा एवं कला का महत्व
7. उत्तर भारत एवं पूर्वोत्तर भारत की रामकथा एवं कलाओं का तुलनात्मक विवेचन
8. वर्तमान परिदृश्य में रामकथा एवं लीला की प्रासंगिकता
9. पूर्वोत्तर भारत के संदर्भ में रामलीला के विविध रूप
10. मानवीय मूल्य एवं मर्यादा के परिपेक्ष्य में राम का जीवन
11. समकालीन साहित्य में रामकथा का पुनर्सृजन

उक्त विषयों के अलावा संबंधित अन्य उप-विषयों पर भी आलेखों का स्वागत है। आलेख की भाषा हिन्दी, बंगला, कॉकबरक एवं अंग्रेजी हो सकती है।

**आलेख-सार (Abstract) भेजने की अंतिम तिथि 15 मार्च तथा पूर्ण आलेख-सार (Abstract) भेजने की अंतिम तिथि 18 मार्च, 2022 है।**

**ईमेल-**
**milanrani08@tripurauniv.ac.in**
somdev@tripurauniv.ac.in
debarajpanigrahi@tripurauniv.ac.in
malaydeb@tripurauniv.ac.in
khumtiya.kokborok@gmail.com

*सम्पादन समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ शोधालेखों को विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा।
*संपादन-समिति द्वारा स्वीकृत लेखों को वाणी प्रकाशन, दिल्ली की ओर से पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जाएगा।

संपर्क-
**संगोष्ठी संयोजक- डॉ. मिलन रानी जमातिया**
**मो-8974009245**
**सह-संयोजक- डॉ. सोमदेव बनिक, मो-8787723992**
**सह-संयोजक- डॉ. देवराज पाणिग्रही**
**मो-8787571089**
**सह-संयोजक- डॉ. मलय देब, मो-7002960174**
**सह-संयोजक- श्रीमती खुमतिया देबबर्मा**
**मो-9485098470**